"शब्द"

(28.03.2022)

शब्द बोलते हों तो
आप समर्थ हैं
उन में भाव हों तो
कोई अर्थ है
भावार्थ ही सुन्न हो तो
सब व्यर्थ है।

शब्द मिलें अगर गले
तो ये सपर्श है
गर उलझ जाएं कहीं
तो फ़िर संघर्ष है
और मौन रह जाएं तो
एक ईश्वरीय संबंध है।

शब्द बरसते रहें तो
रोमांस सा है
शब्द गरजने लगें तो
रोमांच सा है
और लरजने लगें तो
अविश्वास सा है।

शब्द एहसास हैं
उसके न सिर्फ होने का
अपितु प्रयास हैं
उसे नहीं खो देने का
पर यथार्थ भी हैं
जागते हुए के सोने का।

शब्दों का मूल्य न हो
तो कुछ व्यंग हैं
अमूल्य गर मान लो तो
तो मूलत: निहंग हैं
सच बोलने से डर जाएं
तो सब अनर्थ है!

शब्द ताला तो हैं ही
मगर निशब्द हो जाएं
तो उसकी चाबी भी हैं
शब्द खोज ही नहीं
शोध व प्रमाण भी हैं
हक में खड़े हो जाएं
तो प्रणाम से ही हैं।

शब्द कितने भी सिमट न जाएं
आस पास तुम्हारे
अगर छू ही न सकें तुम्हारा मन
तो कुछ बेजार से हैं
बेईमान हो जाएं अपने वजूद से
तो एक दीवार से हैं !
तो स्वार्थ हैं
और वस्त्रधारी हों
तो संसार हैं
आत्मा से लिपट जाएं
तो प्यार हैं!

शब्द गर्ज हैं
शब्द अर्ज हैं
शब्द मर्ज हैं
शब्द कर्ज हैं
और गर रंज हो जाएं
निरंतर भीतरी जंग हैं।

शब्द चेतन ही नहीं
चेतना हैं ब्रह्मांड की
शब्द रूधन ही नहीं
रुझान हैं अंद्रुण मंथन का
और ब्रह्मास्त्र ही नहीं
सारांश है आदि अनंत का।

शब्द निर्वस्त्र से हों
तो स्वार्थ हैं
और वस्त्रधारी हों
तो संसार हैं
आत्मा से लिपट जाएं
तो प्यार हैं!